मेंढक, मेंढक ही रहेगा!

मैक्स वी.

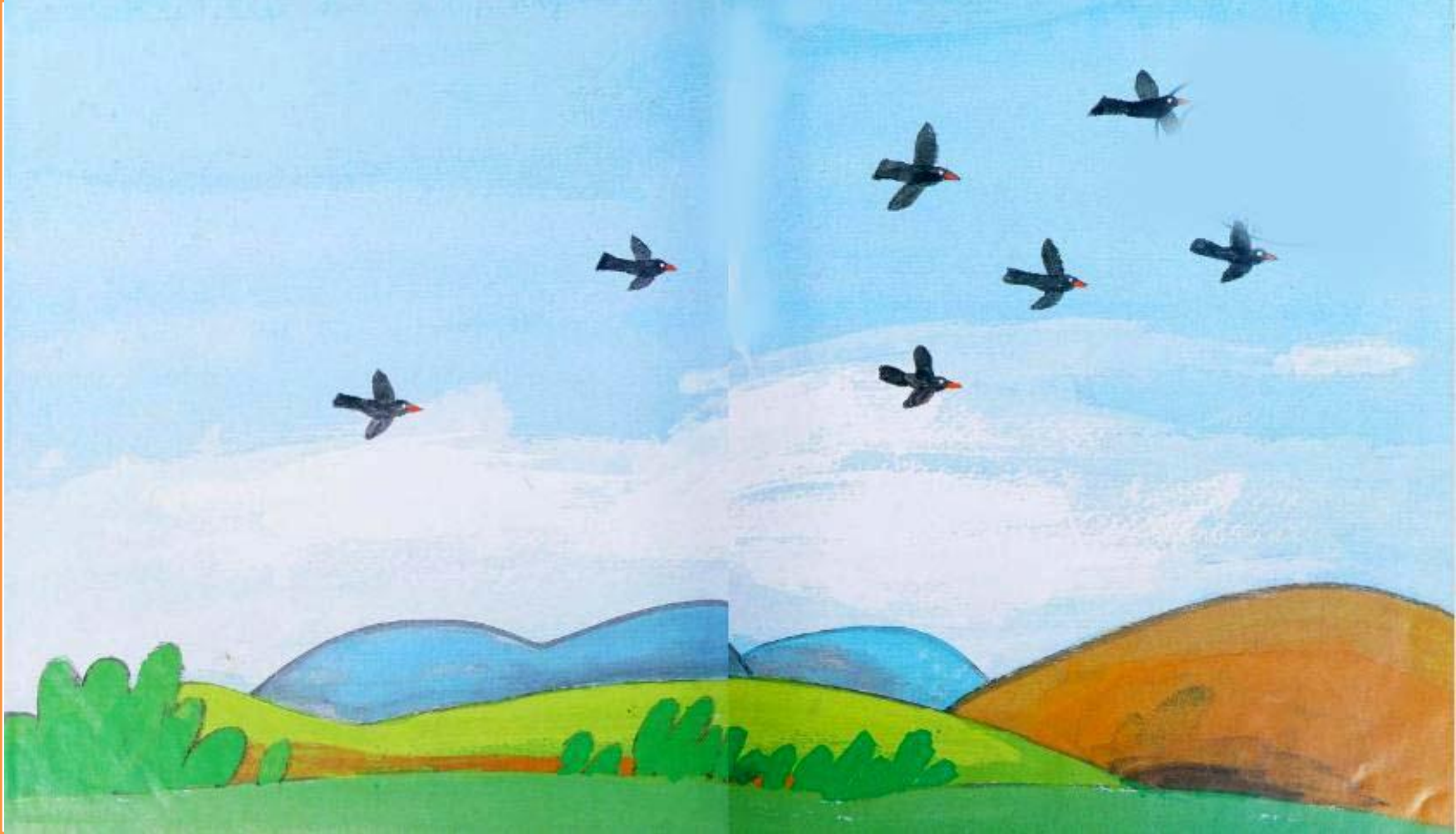

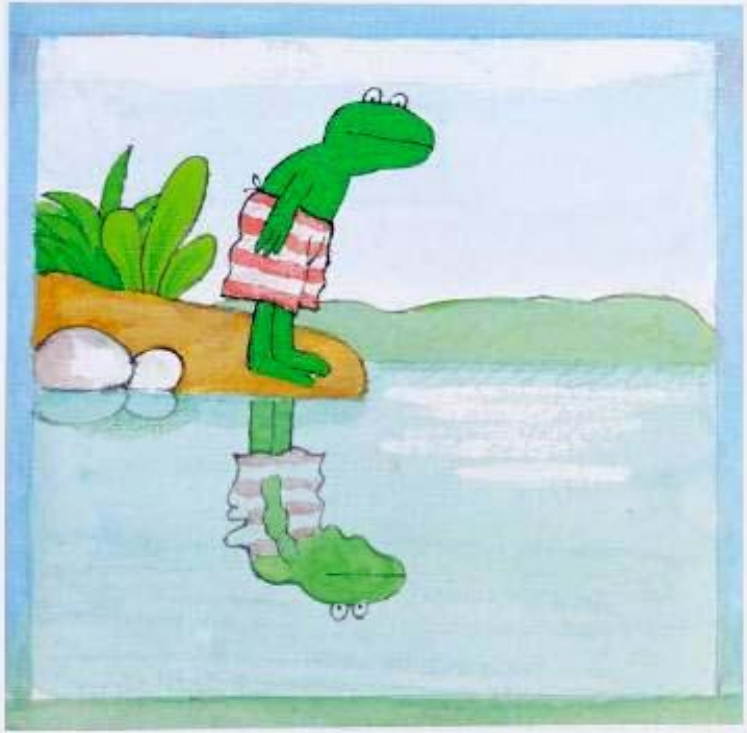

"मैं कितना भाग्यशाली हूँ," मेंढक ने अपनी परछाई को पानी में निहारते हुए कहा. "मैं सुन्दर हूँ और मैं पानी में बाकी सभी से अच्छी तरह से गोता लगा सकता हूँ. मैं हरे रंग का हूँ, और वही मेरा प्रिय रंग है. दुनिया में मेंढक होना सबसे अच्छी बात हैं."

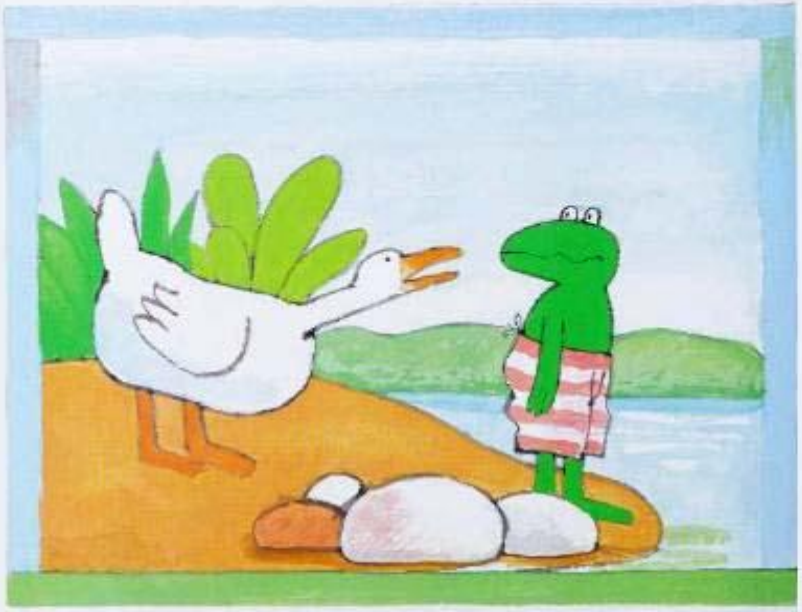

"फिर मेरा क्या होगा?" बत्तख ने पुछा. "मैं सफ़ेद रंग की हूँ. क्या मैं देखने में सुन्दर नहीं हूँ?

"नहीं तुम सुन्दर नहीं हो," मेंढक ने कहा, "तुम में कहीं कोई हरा रंग नहीं है."

"पर मैं उड़ सकती हूँ," बत्तख ने कहा, "जबकि तुम नहीं उड़ सकते हो."

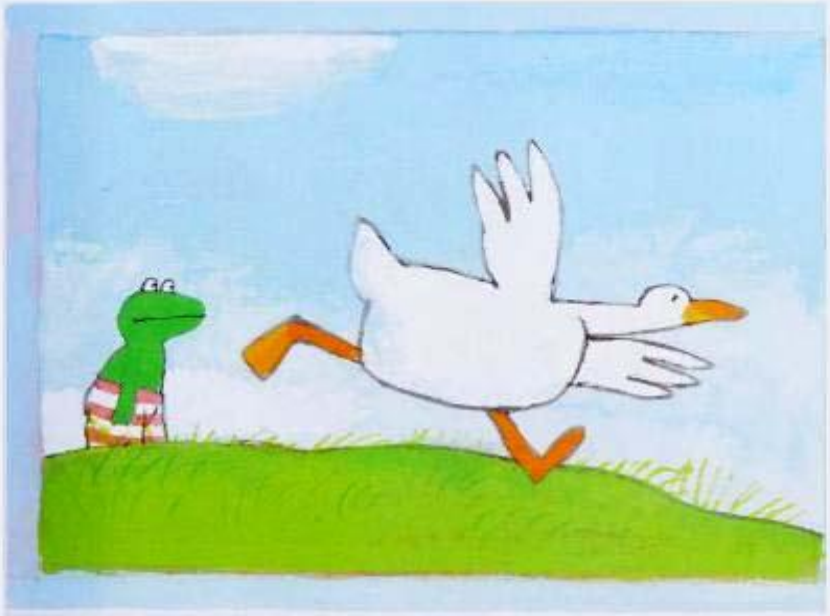

"ठीक है!" मेंढक ने कहा. "पर मैंने तुम्हें कभी उड़ते हुए नहीं देखा है."

"मैं कुछ आलसी ज़रूर हूँ," बत्तख ने कहा, "पर मैं उड़ सकती हूँ. ज़रा देखो." फिर बत्तख तेज़ी से दौड़ी और उसने जोर से आवाज़ करते हुए अपने पंख फड़फड़ाये.

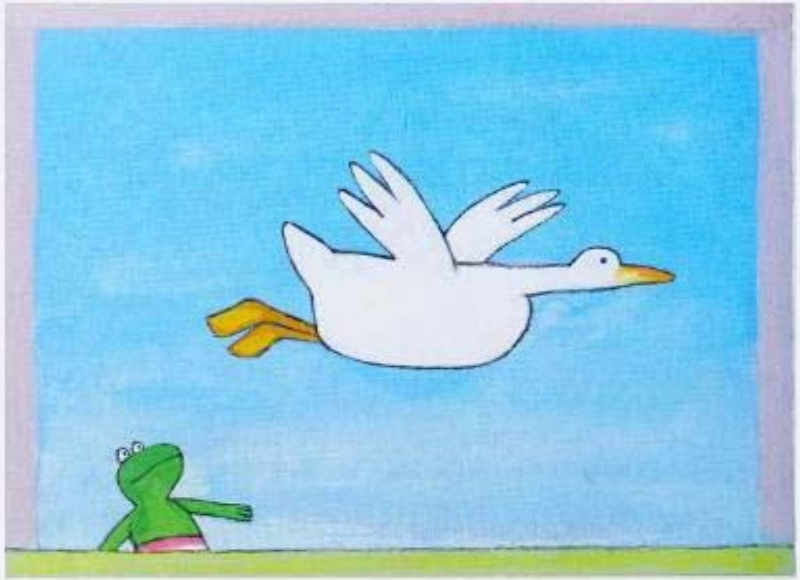

फिर अचानक बत्तख ज़मीन पर से ऊपर उठी और बड़ी खूबसूरती के साथ आसमान में उड़ी. उसने हवा में कुछ चक्कर लगाए और फिर मेंढक के सामने घास पर जाकर उतरी.

"गज़ब!" मेंढक, बत्तख की उड़ान देखकर चिल्लाया. "मैं भी उड़ना चाहता हूँ."

"पर तुम उड़ नहीं सकते हो," बत्तख ने कहा. "क्योंकि तुम्हारे पंख नहीं हैं."

फिर बत्तख ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर चली.

अब मेंढक अकेला बचा और उसने फिर से उड़ने का अभ्यास करना शुरू किया. वो तेज़ी से ज़मीन पर दौड़ा और उसने ज़ोर से अपने हाथ फड़फड़ाना शुरू किए. लेकिन पूरी कोशिश करने के बाद भी मेंढक ज़मीन से उठ नहीं पाया.

उससे मेंढक बहुत निराश हुआ.

"मैं किसी लायक नहीं हूँ," उसने सोचा. "मैं उड़ तक नहीं सकता. काश, मेरे पंख होते!"

फिर मेंढक के दिमाग में एक बढ़िया विचारा आया. जो कुछ भी बत्तख कर सकती है, वो मेंढक भी कर सकता है.

एक हफ्ते तक मेंढक कागज़ की एक शीट और कुछ डोरी के साथ काम करता रहा. अंत में वो अपनी पहली उड़ान के लिए तैयार हुआ.

वो नदी के पास की पहाड़ी पर गया.

वो पहले लम्बी दूरी तक दौड़ा जैसे उसने बत्तख तो करते हुए देखा था.

फिर वो अपने दोनों हाथ फैलाकर पहाड़ी से हवा में कूदा.

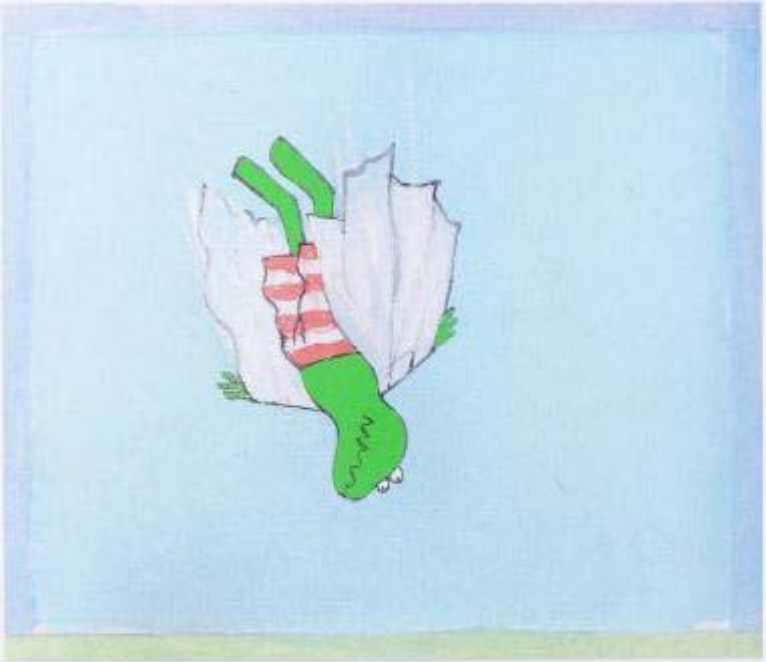

कुछ सेकंड तक वो किसी चिड़िया की तरह हवा में तैरता रहा. लेकिन फिर उसके पंख उखड़ गए और किसी पत्थर की तरह ज़मीन पर जाकर गिर गए और मेंढक खुद छपाक से नदी में गिर गया. पानी में गिरने से कम-से-कम उसे चोट नहीं लगी.

तभी मेंढक ने चूहे को पानी में से निकलते हुए देखा.

"तुम्हें पता होना चाहिए था कि मेंढक हवा में उड़ नहीं सकते हैं," चूहे ने कहा.

"क्या तुम उड़ सकते हो?" मेंढक ने चूहे से पूछा.

"बिल्कुल नहीं!" चूहे ने कहा. "मेरे पंख नहीं हैं, लेकिन मैं चीज़ें बनाने में काफी कुशल हूँ."

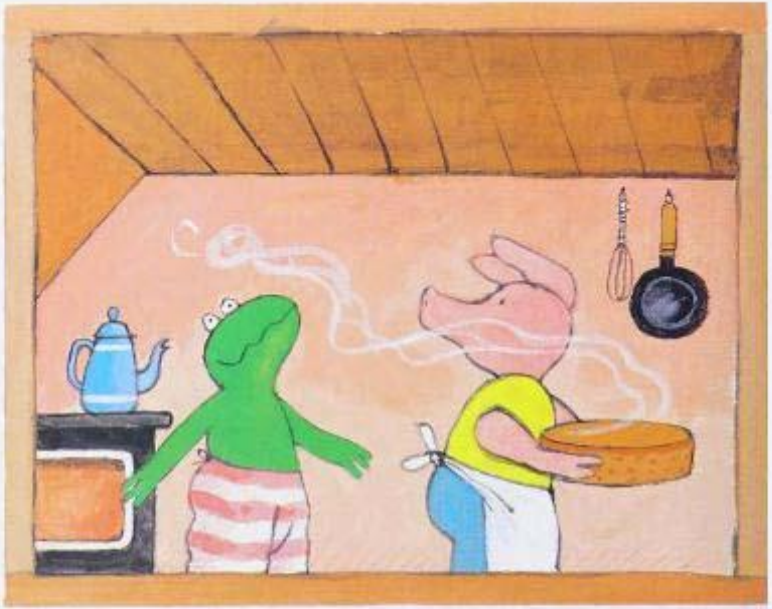

मेंढक ने घर वापिस जाते हुए इसके बारे में सोचा. जाते-जाते उसने सूअर से भी पूछने की सोची.

जब मेंढक पहुंचा तब सूअर अपनी गर्म भट्टी में से केक निकाल रहा था.

"सूअर, क्या तुम उड़ सकते हो?" मेंढक ने पूछा.

"बिल्कुल नहीं!" सूअर ने कहा. "अगर मैंने कोशिश की भी तो मुझे बहुत चोट लगेगी."

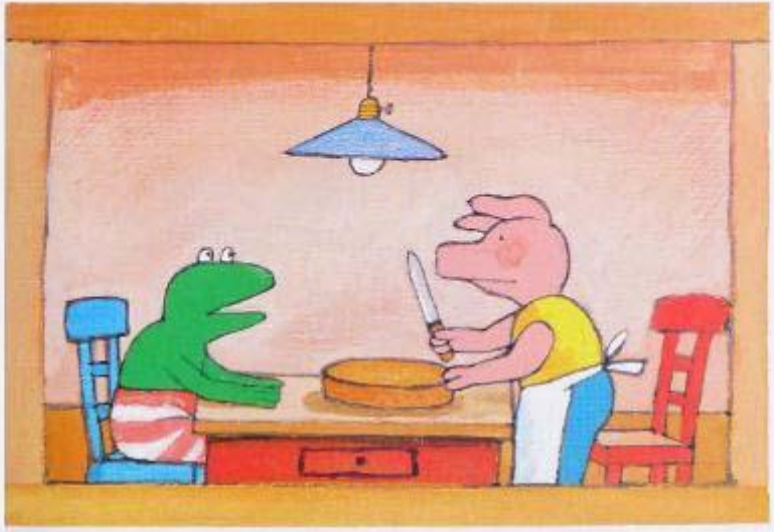

"फिर तुम क्या कर सकते हो?" मेंढक ने पूछा.

"मैं कई चीज़ें कर सकता हूँ,' सूअर ने उत्तर दिया. "मैं दुनिया में सबसे अच्छे केक बना सकता हूँ. मैं देखने में काफी सुन्दर हूँ. मेरा शरीर गुलाबी है, और गुलाबी मेरा सबसे प्रिय रंग है."

मेंढक को सूअर की बात सच लगी.

"मुझे लगता है कि मैं भी अच्छा केक बना पाऊंगा," मेंढक ने घर जाते हुए सोचा.

मेंढक को जो भी खाने की चीज़ मिलीं उसने उन्हें एक बर्तन में डाला और वो उन्हें हिलाने लगा, बिल्कुल उसी तरह जैसे उसने सूअर को करते हुए देखा था.

फिर उसने केक के मिश्रण को एक बर्तन में डाला और पकने के लिए उसे भट्टी में डाला.

"देखना," मेंढक ने सोचा. "मेरा केक बहुत स्वादिष्ट होगा."

पर कुछ देर बाद बर्तन में से धुआं निकलने लगा और उसकी बदबू बहुत खराब थी. केक पूरी तरह से जल चुका था. "मैं एक केक तक नहीं बना सकता," मेंढक ने निराश होकर सोचा.

फिर मेंढक, खरगोश से मिलने के लिए गया.

"खरगोश, क्या मैं तुमसे एक किताब उधार ले सकता हूँ?" मेंढक ने पूछा.

"क्या तुम्हें पढ़ना आता है?" खरगोश ने आश्चर्य से पूछा.

"नहीं," मेंढक ने कहा. "क्या तुम मुझे पढ़ना सीखा सकते हो?"

देखो," खरगोश ने कहा. "देखो यह अक्षर "अ" है और वो अक्षर "ब" और वो अक्सहर "स" है.

"ठीक है, मुझे समझ में आ गया," मेंढक ने कहा.
उसके बाद मेंढक हाथ में किताब लेकर अपने घर की ओर दौड़ा.

फिर वो आराम से कुर्सी पर बैठा और उसने किताब खोली. पर किताब के पन्नों पर लिखे शब्द उसे एकदम ऊल-जलूल नज़र आए. मेंढक एक शब्द तक नहीं पढ़ पाया. एक घंटे मेहनत करने के बाद भी उसके कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा. "मैं यह किताब कभी नहीं पढ़ पाऊंगा!" मेंढक ने कहा. "यह मेरे लिए बहुत ही कठिन काम है. मैं एक बहुत ही साधारण, और बेवकूफ मेंढक हूँ."

बहुत निराश और दुखी होकर मेंढक, खरगोश को किताब वापिस करने गया. "क्या, तुम्हें किताब पसंद आई?" खरगोश ने पूछा.

मेंढक ने दुखी होकर अपना सर हिलाया. "मुझे पढ़ना नहीं आता है," उसने कहा. "मुझे केक तक बनाना नहीं आता है, मुझ में कोई कुशलता नहीं है, मैं उड़ तक नहीं सकता हूँ. तुम मुझ से कहीं अधिक होशियार हो. मैं कुछ भी नहीं कर सकता हूँ. मैं बस एक साधारण हरा मेंढक हूँ." फिर मेंढक रोने लगा.

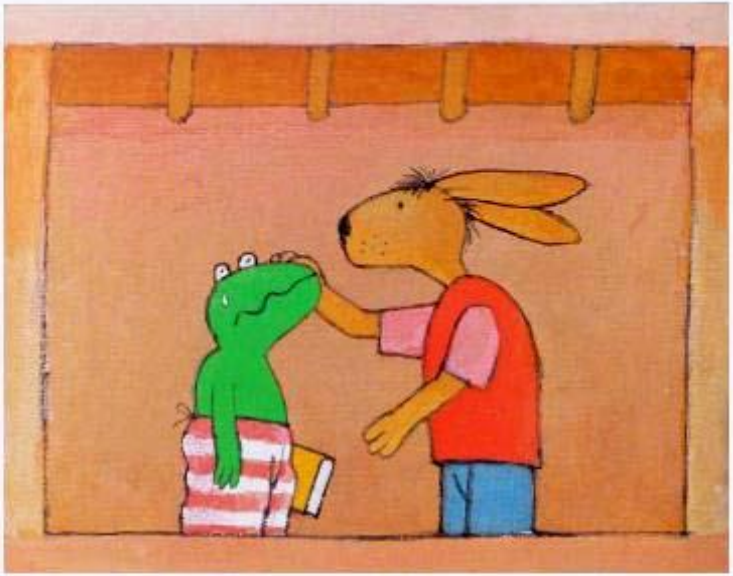

"पर मेंढक, मेरी बात सुनो," खरगोश ने कहा. "मैं भी उड़ नहीं सकता, न ही मुझे केक और अन्य चीज़ें बनानी आती हैं. मैं तुम्हारी तरह कूद भी नहीं सकता हूँ और न ही तैर सकता हूँ. .... क्योंकि मैं एक खरगोश हूँ. और तुम एक मेंढक हो, और हम सभी तुम्हें बहुत प्यार करते हैं."

फिर मेंढक नदी के किनारे गया और उसने अपनी परछाई पानी में देखी.

"वो मैं ही हूँ," उसने सोचा. "एक हरा मेंढक हूँ जो धारियों वाला नेकर पहने है."

अचानक मेंढक को अच्छा लगा और वो बहुत खुश हुआ. "खरगोश ने सही ही कहा," उसने सोचा. "मैं भाग्यशाली हूँ कि मैं एक मेंढक हूँ." और फिर वो ख़ुशी से कूदने लगा, फिर उसने एक लम्बी छलांग लगाई वैसी जो सिर्फ मेंढक ही लगा सकते हैं. उसे ऐसा लगा जैसे वो हवा में उड़ रहा हो!

अंत